P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जगद्गुरू रामान्दाचार्या राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रशासनिक गठन का वैयक्तिक अध्ययन

वनिता गोदारा
सहायक प्रोफेसर,
शिक्षा संकाय,
पीरामल गोपीकृष्ण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
बांगड़, झुंझुनूं,
राजस्थान, भारत

सारांश

बालक किसी भी राष्ट्र या समाज की अमूल्य, धरोहर होते हैं, इन्हीं के इर्द–गिर्द राष्ट्र के विकास का पहिया घूमता है। फलस्वरूप मानव इतिहास में प्राचीनकाल से ही शिक्षा का विकास एवं प्रसार होता रहा है। प्रत्येक देश अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक विकास के लिए अपनी शिक्षा प्रणालियाँ विकसित करता रहा है। शिक्षा द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है। शिक्षा ऐसी हो जो बालक का सर्वांगीण विकास करें। सर्वांगीण विकास के अन्तर्गत मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, संवेदात्मक आदि सभी तत्व सम्मिलित होते हैं। विद्यालय की कक्षाओं से निकलकर बालक राष्ट्र के विकास में सक्रिय भागीदारी निभाते है और अपनी अभियोग्यतानुसार शारीरिक एवं मानसिक विकास के साथ–साथ विकासोन्मुखी प्रगति की ओर गति करते हुए उनमें धैर्य, विवेक, सहिष्णुता आदि मानवोचित गुणों का विकास करते है अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा जीवन जीने की कला सिखाती हैं। इस शोध के उद्देश्य है– जगद्गुरू रामान्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर की प्रशासनिक संरचना का अध्ययन करना, जगद्गुरू रामान्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के प्रशासनिक प्रावधानों का अध्ययन करना, जगद्गुरू रामान्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर की वर्तमान में प्रचलित प्रशासनिक प्रक्रिया का अध्ययन करना, जगद्गुरू रामान्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर की प्रशासनिक गठन में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना। इस शोधकार्य को जगद्गुरू रामान्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के प्रशासनिक गठन तक ही सीमित रखा गया है। प्रस्तुत शोध हेतु वैयक्तिक अध्ययन विधि का चयन किया गया है। शोध के निष्कर्ष दर्शाते है कि विश्वविद्यालय प्रशासन की सार्थकता कुलपति की नेतृत्व क्षमता, निर्णय क्षमता, दायित्व निर्वाह, दूरदर्शिता, प्रबंध क्षमता, संवेगात्मक स्थिरता, सम्प्रेषण क्षमता, मानवीय सम्बन्ध व नवाचार ईद–गिर्द घुमती पाई जाती है। कुलपति द्वारा विश्वविद्यालय में उत्कृष्ट प्रशासनिक क्षमताओं के माध्यम से कुलपति व कुलसचिव, कुलपति व विभागाध्यक्ष, विभागाध्यक्षों व कर्मचारियों, प्राफेसर व विद्यार्थी, प्राफेसर व प्राफेसर, कुलपति व विद्यार्थियों के मध्य तारतम्य स्थापित करके विश्वविद्यालय की प्रशासनिक क्षमताओं को एक नवीन आयाम प्रदान करता है।

मुख्य शब्द : जगद्गुरू रामान्दाचार्या, वैयक्तिक अध्ययन, प्रशासनिक गठन, विश्वविद्यालय, शैक्षिक प्रशासन, राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रशासन एवम् संगठन।

प्रस्तावना

''शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन नही है न यह विचारों की समर्थन स्थली है और न ही नागरिकता की पाठशाला है। यह आध्यात्मिकता जीवन में प्रवेश की दीक्षा है, सत्य की खोज में लगी मानव आत्मा का प्रशिक्षण हैं।''

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

शिक्षा मानव विकास का आधार स्तम्भ है। शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के माध्यम से सहज ही ज्ञात हो जाता है कि कौनसा राष्ट्र विकसित, विकासशील तथा पिछड़ा हुआ है। किसी राष्ट्र का विकास उसकी प्राकृतिक सम्पदा पर उतना निर्भर नही करता है जितना कि उसके निवासियों के उन्नत तकनीकों के ज्ञान पर। इजराइल, जापान, हॉलेण्ड आदि अनेक देश है जो प्राकृतिक संसाधनों से विहीन होने के बावजूद उच्च शिक्षा एवं तकनीकी ज्ञान के फलस्वरूप विकसित एवं उन्नत राष्ट्रों की श्रेणी में खड़े हैं।

रस्किन महोदय ने लिखा है– *''शिक्षा का सम्पूर्ण उद्देश्य केवल सही काम करना सिखाना नहीं है; बल्कि सभी चीजों को प्यार करना सिखाना है; न केवल उद्यमी बनाना सिखाना है बल्कि उद्यम को प्यार करना सिखाना है; न केवल न्यायपूर्ण होना सिखाना हैं– बल्कि न्याय के लिए व्यग्र होना सिखाना है, न केवल पवित्र होना सिखाना है बल्कि पवित्रता से प्यार करना है।''*

बालक किसी भी राष्ट्र या समाज की अमूल्य, धरोहर होते हैं, इन्हीं के इर्द–गिर्द राष्ट्र के विकास का पहिया घूमता है। फलस्वरूप मानव इतिहास में प्राचीनकाल से ही शिक्षा का विकास एवं प्रसार होता रहा है। प्रत्येक देश अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक विकास के लिए अपनी शिक्षा प्रणालियाँ विकसित करता रहा है। शिक्षा द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है। शिक्षा ऐसी हो जो बालक का सर्वांगीण विकास करें। सर्वांगीण विकास के अन्तर्गत मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, संवेदात्मक आदि सभी तत्व सम्मिलित होते हैं। विद्यालय की कक्षाओं से निकलकर बालक राष्ट्र के विकास में सक्रिय भागीदारी निभाते है और अपनी अभियोग्यतानुसार शारीरिक एवं मानसिक विकास के साथ–साथ विकासोन्मुखी प्रगति की ओर गति करते हुए उनमें धैर्य, विवेक, सहिष्णुता आदि मानवोचित गुणों का विकास करते है अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा जीवन जीने की कला सिखाती हैं।

जगदगुरू रामान्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

सम्पूर्ण संस्कृत ज्ञान–विज्ञान को सतत् अनुसंधान द्वारा प्रकाश में लाने, समाजोपयोगी बनाने, वेदों मे निहित लौकिक–अलौकिक विशिष्ट विज्ञान को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करने, संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान करने के उद्देश्यों से राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। 6 फरवरी 2001 को राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय का विधिवत् शुभारम्भ हुआ। इसके प्रथम कुलपुति पदमश्री डॉ. मण्डल थे। महामहिम राज्यपाल श्री अंशुमान सिंह तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 17 अप्रैल 2003 को जगद्गुरू रामान्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की आधारशिला रखी।

जगद्गुरू संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापना के उद्देश्य

1. संस्कृत भाषा को बढ़ावा देना।
2. संस्कृत एवं कर्मकाण्ड के माध्यम से युवाओं को रोजगार प्राप्ति हेतु अवसर देना।
3. योग साधना के माध्यम से विद्यार्थियों को स्वस्थ जीवन जीने हेतु प्रेरित करना।
4. खेलों के माध्यम से विद्यार्थियों का स्वस्थ मानसिक विकास करना।

साहित्यावलोकन

शर्मा, दयाशंकर (1987) ने *''विद्यालयों संगमों की प्रशासनिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन (ग्रामीण/शहरी)''* विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में शोध अध्ययन।

इस शोध के प्रमुख उद्देश्यों में ग्रामीण आँचल में कार्यरत विद्यालय संगम की प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन, शहरी क्षेत्र में कार्यरत विद्यालय की प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन, विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में स्थित विद्यालय सगमों के कार्य में उपस्थित होने वाली प्रशासनिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना, ग्रामीण व शहरी छात्रों के मौलिक स्तर उन्नयन में विद्यालयों सगमों के प्रशासनिक भूमिका में अन्तर है या नहीं स्पष्ट करना, विद्यालय संगमों के कार्य में आने वाली प्रशासनिक समस्याओं के समाधान सम्बन्धी सुझाव देना थे। न्यादर्श के रुप में उदयपुर जिले के चार विद्यालय का चयन किया है जिसमें दो–दो शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों का चयन किया गया। इस परीक्षण सत्यता की जाँच कर लेने के लिए बड़े समूह के परिणाम ज्ञात करने के लिए यू–टेस्ट का सार्थक प्रयोग किया गया। इसमें सहसम्बन्ध की निश्चयता मान -0.27 प्राप्त हुआ है जिसके निष्कर्ष यह प्राप्त होता है कि विद्यालय सगमों की प्रशासनिक समस्याओं (ग्रामीण/शहरी) तुलना करने पर निम्न सम्बन्ध पाया गया है।

बोस, एस.के.; बनर्जी, पी.आर.; मुखर्जी, एस. पी. (1973) ने *''कलकत्ता के सात बड़े महाविद्यालय का शैक्षिक प्रशासनिक और वित्तीय मामलों व्यक्तिगत अध्ययन।''* विषय पर कलकत्ता विश्वविद्यालय में शोधकार्य किया।इस शोध के उद्देश्यों में महाविद्यालयो के शैक्षिक एवम् वित्तीय क्षेत्रों की परख करना तथा महाविद्यालयों की प्रशासनिक व्यवस्था का अध्ययन करना था। न्यादर्श के रुप में शोधकर्ता ने कलकत्ता के 7 महाविद्यालयों का चयन किया। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि महाविद्यालय अपनी आमदनी से अधिक खर्चा करते थे। महाविद्यालयों के फर्नीचर, पुस्तकालय, प्रयोगशाला आदि पर बहुत कम खर्च किया गया। जबकि सातों महाविद्यालयों में सरकार की ओर से पूर्णतया उचित सहयोग दिया जा रहा है।

सुरेखा, हिंगड (1995) ने *''खुला विश्वविद्यालय के प्रशासन एवम् संगठन एवम् कार्यों का अध्ययन''* विषय पर पीएच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया।

शोध उद्देश्यों में खुला विश्वविद्यालय की विकासात्मक पृष्ठभूमि का अध्ययन, खुला विश्वविद्यालय की संगठनात्मक संरचना का अध्ययन, खुला विश्वविद्यालय की प्रशासन एवम् कार्य सम्बन्धित तथ्यों का अध्ययन करना। न्यादर्श के रुप में कोटा खुला विश्वविद्यालय का चयन किया गया। इस शोध से यह निष्कर्ष निकला कि खुला विश्वविद्यालय का संगठनात्मक संरचना सुदृढ़ हैं तथा प्रशासन एवम् कार्यों का सफलतापूर्वक पूर्ण किया जाता हैं।

महात्मा, राजकुमारी (1991) ने *''प्रशासकीय निर्णय शैली का मानवीय सम्बन्धों का प्रभाव का अध्ययन''* विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में शोधकार्य किया।

शोध के उद्देश्य उदयपुर नगर के विभिन्न विद्यालयों में प्रशासकीय निर्णय शैली का पता लगाना, यह ज्ञात करना की इन विद्यालयों में निर्णय लेने का मानवीय सम्बन्धों पर क्या प्रभाव पड़ता है, सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों की निर्णय शैलीयों की तुलना करना

तथा दोनों में मानवीय सम्बन्धों की स्थिति की तुलना करना तथा यह ज्ञात करना की कौनसी निर्णय शैली तुलनात्मक दृष्टि से अच्छे मानवीय सम्बन्धों के विकास के लिए अधिक उपयुक्त है।

भटनागर, नीलिमा (1999) ने *''गृह विज्ञान महाविद्यालय उदयपुर का प्रशासन एवं संगठन का अध्ययन''* विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में शोधकार्य किया।

शोध के उद्देश्य गृहविज्ञान महाविद्यालय उदयपुर के प्रबन्धकीय संगठन का अध्ययन करना, महाविद्यालय के विभिन्न कार्यो का अध्ययन करना एवं संगठन को प्रभावी बनाने हेतु सुझाव देना था। है। न्यादर्श के रुप में गृहविज्ञान महाविद्यालय उदयपुर के प्रबन्धकीय एवं संगठन क्षेत्र को सम्मिलित किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि संगठन के प्रशासन एवं नियंत्रण का पूर्ण दायित्व डीन का हैं, संगठन नियोजित एवं प्रभावी ढंग से कार्यशील हैं।

कावड़िया, भावना (1997) ने *''राजस्थान विद्यापीठ (प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय) की प्रशासनिक एवं कार्यप्रणाली का अध्ययन''* विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में शोधकार्य किया।

शोध के प्रमुख उद्देश्यों में राजस्थान विद्यापीठ (प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय) की प्रशासनिक संरचना का अध्ययन, कार्यप्रणाली का अध्ययन, प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन एवं प्रशासन एवं कार्यो को प्रभावी बनाने हेतु सुझाव देना था। न्यादर्श के रुप में राजस्थान विद्यापीठ (प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय) का चुनाव किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि राजस्थान विद्यापीठ (प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय) प्रशासनिक दृष्टि से एक सीमा तक ही विश्वविद्यालय के अनुरुप बन पाया हैं एवं विश्वविद्यालय को प्रशासनिक क्रियाओं संबंधी स्वायत्ता पूर्णरुपेण प्रदान नही की गयी हैं।

शर्मा, स्मृति (1995) ने *''नवोदय विद्यालय में संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन''*, विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से लघु शोधकार्य किया।

शोध के उद्देश्य नवोदय विद्यालयों के वर्तमान संगठनात्मक (प्रशासनिक, भौतिक, शैक्षिक एवं सहशैक्षिक) वातावरण का अध्ययन करना, नवोदय विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना, नवोदय विद्यालयों में उपयुक्त संगठनात्मक वातावरण बनाने के लिए सुझाव शोध विधि के रुप में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि नवोदय विद्यालयों में भौतिक वातावरण ठीक है, विद्यालय संबंधी नीतियों के निर्माण में अध्यापकों की राय ली जाती है, विद्यालयों में शैक्षिक वातावरण अच्छा है, नवोदय विद्यालयों के प्राचार्य सहशैक्षिक प्रवृत्तियों से संतुष्ट है एवं नवोदय विद्यालयों में अध्यापकों का मनोबल उच्च पाया गया।

टेक्स एवम् लीफम ने *''पर्सनल्टी फेक्टर्स इफैक्टिंग द एडमिनिस्ट्रेशन''* विषय पर शोधकार्य किया।

इस शोध के उद्देश्य आयु के संदर्भ में प्रशासन पर व्यक्तित्व का प्रभाव ज्ञात करना, युवा प्रशासन की सफलता के कारणों को ज्ञात करना, प्रशासन को प्रभावशाली बनाने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव ज्ञात करना। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि वृद्ध प्राचार्य व युवा प्राचार्य से कम काम को अंजाम दे पाते हैं। युवा प्राचार्य में प्रशासन को सही एवम् मजबूत बनाने की क्षमता होती है।

एलबर्न (1967) ने *''एडमिनिस्ट्रेटिव स्केल इन एडमिनिस्ट्रेशन''* विषय पर पीएच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया।

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य प्रशासनिक दक्षता का उम्र से सम्बन्ध ज्ञात करना, प्रशासनिक दक्षता को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्वों को ज्ञात करना। शोध उपकरण में अध्ययन के लिए प्रशासनिक दक्षता प्रमापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि युवा प्रधानाध्यापक वृद्ध प्रधानाध्यापक की अपेक्षा प्रभावी प्रशासन करते पाये गये, प्रशासन को दक्ष बनाने के प्रमुख कारक दैनिक क्रिया–कलापों का व्यवस्थित संचालन, विद्यालय प्रबन्धक व्यवस्था की दक्षता, सरल सम्प्रेषण, समूह के साथ व्यवहार, समन्वय एवम् निर्देशन देते पाये गये।

Susan, Coral Hay (1991): *"The Singa Girls School: A Case Study in Educational Development"* Cornell University, Africa.

इस शोध का उद्देश्य विद्यालय की योजना, प्रशासनिक, वित्तीय, पाठ्यक्रम, स्टॉफ तथा विद्यालय सम्पर्क व्यवस्था का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना था। शोध विधि के रुप में सर्वेक्षण एवं वैयक्तिक अध्ययन विधि का चयन किया गया। यह शोध कार्य 1981 से 1990 तक के विद्यालय को दर्शाता है जिसमें इसके आरम्भ, निर्माण तथा पूर्ण रूप से जैरियन होना सम्मिलित है। अंतिम निष्कर्ष के रूप में विद्यालय की सफलता में 6 कारकों ने योगदान दिया है–(1) विद्यालय जैरियन युवाओं को शिक्षा प्रदान करता है, जिससे वे व्यावसायिक, सामाजिक तथा स्वास्थ्य क्षेत्र में योगदान प्रदान करते है। (2) यह विद्यालय जैरे की शैक्षिक असमानता को कम करता है। (3) यह एक संगठन हो गया है। (4) यह भविष्य की उन्नति के लिए क्षमता रखता है। (5) यह अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का अच्छा उदाहरण है। (6) यह वैयक्तिक उन्नति का साधन है।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध समस्या का कथन है– *''जगद्गुरू रामान्दाचार्या राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रशासनिक गठन का वैयक्तिक अध्ययन''*

शोध समस्या का औचित्य

प्रस्तुत शोध ''जगद्गुरू रामान्दाचार्या राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के प्रशासनिक गठन का वैयक्तिक अध्ययन'' का औचित्य निम्न प्रकार से है–

विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण से

प्रस्तुत शोध विश्वविद्यालय की दृष्टिकोण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस शोध से विश्वविद्यालय की प्रशासनिक व्यवस्था को जानकर समस्याओं से सम्बन्धित सुझाव प्रेषित किये जाएंगे।

संस्कृत विषय के दृष्टिकोण से

प्रस्तुत शोध विश्वविद्यालय में संस्कृत विषय की गुणवत्ता का अध्ययन कर संस्कृत विषय की वास्तविक स्थिति को जाना जायेगा।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दृष्टिकोण से

प्रस्तुत शोध विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। क्योंकि इस लघु प्रयास के अध्ययन से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग जगद्गुरू विश्वविद्यालय की वास्तविक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त कर कई निर्णय ले सकेगा।

अनुसंधानकर्त्री के दृष्टिकोण से

राजस्थान में अभी तक जगद्गुरू रामान्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के बारे में बहुत कम शोध कार्य हुआ है। इस शोध से अनुसंधानकर्त्री विश्वविद्यालय के प्रशासनिक गठन को जान पायेगी।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. जगद्गुरू रामान्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर की प्रशासनिक संरचना का अध्ययन करना।
2. जगद्गुरू रामान्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के प्रशासनिक प्रावधानों का अध्ययन करना।
3. जगद्गुरू रामान्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर की वर्तमान में प्रचलित प्रशासनिक प्रक्रिया का अध्ययन करना।
4. जगद्गुरू रामान्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर की प्रशासनिक गठन में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र का परिसीमन

शोधकार्य को जगद्गुरू रामान्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के प्रशासनिक गठन तक ही सीमित रखा गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध हेतु वैयक्तिक अध्ययन विधि का चयन किया गया है।

शोध उपकरण

इस शोधकार्य की नवीनता एवं विशिष्टता को ध्यान में रखते हुए स्वनिर्मित उपकरणों का निर्माण किया गया, जो निम्नलिखित हैं–

1. दस्तावेज एकत्रीकरण प्रपत्र।
2. साक्षात्कार अनुसूची।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में जयपुर शहर में स्थित जगद्गुरू रामान्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रशासनिक गठन के वैयक्तिक अध्ययन का न्यादर्श चयन निम्न प्रकार से किया गया है–

क्र.स.	न्यादर्श	संख्या
1.	कुल सचिव	01
2.	विभागाध्यक्ष	10
3.	संकाय सदस्य	10

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से निष्कर्ष प्राप्त हुए कि– जगद्गुरू रामान्दाचार्या राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर की प्रशासनिक ईकाई का मुख्य अधिकारी कुलाधिपति हैं, जो राजस्थान राज्य का राज्यपाल है। वर्तमान में कुलाधिपति महामहिम मार्गेट अल्वा है। यह विश्वविद्यालय के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी है। कुलाधिपति के पास विश्वविद्यालय के भवनों, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों, संग्रहालयों, कार्यशालाओं, परीक्षाओं, सम्बन्धित महाविद्यालय एवं छात्रावास के निरीक्षण का अधिकार है। विश्वविद्यालय वित्तिय संसाधनों का उपयोग कुलाधिपति की अनुमति से ही कर सकता है। कुलाधिपति विश्वविद्यालय को राज्य की ओर से प्राप्त होने वाले संसाधन एवं ग्रान्ट को रोक सकता है। यदि कुलाधिपति, कुलपति के कार्यों से सन्तुष्ट नही हो तो उससे लिखित में जवाब मांग सकता है। अथवा पद से निलम्बित कर सकता है।

जगद्गुरू विश्वविद्यालय का वास्तविक प्रशासनिक अधिकारी कुलपति है। यह विश्वविद्यालय का पूर्णकालिक वैतनिक अधिकारी होता है। कुलपति विश्वविद्यालय के सभी प्रकार के कार्यो का नियन्त्रण, समन्वय एवं निर्देशन करता है।कुलपति एक्जिक्यूटिव काउन्सिल, एकेडमिक काउन्सिल तथा बोर्ड कमेटी का सदस्य रहते हुए इनके कार्यो पर नियन्त्रण रखता है। विश्वविद्यालय के सभी प्रकार के कार्यो के लिए कुलपति जिम्मेदार है। इस प्रकार कुलपति विश्वविद्यालय की इमारत की नींव हैं। कुलसचिव विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण प्रशासनिक अधिकारी है। विश्वविद्यालय के रिकॉर्ड के संरक्षण का दायित्व कुलसचिव का है। कुलसचिव कार्यकारी परिषद् और शैक्षणिक परिषद् के पदेन सचिव के रूप में कार्य करता है। यदि कुलपति या कार्यकारी परिषद् द्वारा आवश्यक समझा जायें तो विधि और नियमों के अन्तर्गत कुलसचिव को अतिरिक्त जिम्मेदारियों के लिए निर्देशित किया जा सकता है। कुलसचिव अपनों कर्त्तव्यों के निर्वाहन में सभी विभागों के मध्य समन्वयन बनाने का भी कार्य करता है। विभागाध्यक्ष अपने विभागों की बेहतर कार्यप्रणाली द्वारा विश्वविद्यालय की प्रशासनिक संरचना को मजबूत बनाते है। विभागाध्यक्ष अपने दायित्वों के निर्वाह में अपने कर्मचारियों से भेदभावरहीत व्यवहार कर एवं उनका अच्छी तरह से विश्वविद्यालय के उत्थान एवं विकास में काम लेते है। जगद्गुरू रामान्दाचार्या राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय को पूर्ण स्वायत्ता प्राप्त नही है, विश्वविद्यालय यू.जी.सी. के अधीन है। यू.जी.सी. के प्रावधानों के अन्तर्गत विश्वविद्यालय को पूर्ण स्वायत्ता प्रदान नही की जा सकती, अतः जगद्गुरू संस्कृत विश्वविद्यालय भी यू.जी.सी. के प्रावधानों के अधीन ही संचालित है। विश्वविद्यालय की स्थापना के पीछे मुख्य उद्देश्य संस्कृत भाषा का अधिक से अधिक विस्तार, वेद, वेदांग, उपनिषद्, दर्शन, कला एवं संस्कृति का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा देना एवं रोजगार के नवीन अवसरों का सर्जन करना हैं।

प्रशासनिक व्यवस्था में किसी प्रकार की कोई कमी नही है, क्योंकि सभी प्रशासनिक कार्य सभी कर्मचारियों के सहयोग से पूर्ण किये जाते है। उद्देश्यों

को प्राप्त करने में सभी दृष्टिकोण से विश्वविद्यालय की संरचना उपयुक्त हैं। विश्वविद्यालय को प्रशासनिक प्रकिया में कर्मचारियों एवं वित्त की कमी जैसी समस्याओं से सामना करना पड़ता हैं। कुलसचिव प्रशासनिक संरचना को प्रभावी बनाने हेतु विश्वविद्यालय में कर्मचारियों के रिक्त पदों को जल्द से जल्द भरने एवं सभी विभागों के कर्मचारियों में समन्वय स्थापित करने का प्रयास करते है। कर्मचारियों की नियुक्ति के सम्बन्ध प्रशासन को किसी प्रकार की समस्या का सामना नही करना पड़ता है। सर्वप्रथम विज्ञप्ति निकालते है, तत्पश्चात् साक्षात्कार द्वारा निष्पक्ष रूप से कर्मचारियों का चयन किया जाता है। लोकतान्त्रिक तरीके से नियुक्ति प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है, फलस्वरूप नियुक्ति प्रक्रिया में किसी प्रकार की समस्या नही आती हैं।

विश्वविद्यालय द्वारा प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षों के व्यावसायिक विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं कार्यशाला का आयोजन किया जाता है, साथ ही निश्चित अन्तराल में वेतन वृद्धि की जाती है। विभागों के मध्य समन्वय स्थापित करने हेतु विश्वविद्यालय में सभी विभागाध्यक्षों के सहयोग से निर्णय लिये जाते है एवं सभी के सहयोग से समस्त कार्य पूर्ण किये जाते है। विश्वविद्यालय को प्रशासकीय व्यवस्था के क्षेत्र में किसी प्रकार की चुनौतियाँ का सामना नही करना पड़ता है। विभागाध्यक्ष होने के नाते अपने विभाग के उत्थान के लिए सभी कर्मचारियों के साथ मित्रवत व्यवहार रखते हुए विश्वविद्यालय के उत्थान हेतु उनमें आत्मविश्वास, स्नेह, दृढ निश्चय, त्याग की भावना का विकास करते हैं। अन्य विभागों के साथ समन्वयन हेतु विभाग द्वारा लिये गये निर्णयों से अन्य विभागों को अवगत करवाया जाता है, तथा विभाग के कार्यो को सभी विभागों के सहयोग से पूर्ण किया जाता हैं। विश्वविद्यालय की गुणवत्ता बढाने हेतु विश्वविद्यालय में ज्योतिष एवं यज्ञों को प्रोत्साहन, मासिक गोष्ठियों का आयोजन, राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताओं का आयोजन, विद्यार्थियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने के उल्लेखनीय प्रयास किये जा रहे है।

विश्वविद्यालय की खास उपलब्धियाँ में ज्योतिष, यज्ञ एवं कर्मकाण्ड शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों के लिए स्वरोजगार के भारत तथा विदेशों में नवीन अवसर प्रदान किये जा रहे है। जगद्गुरू विश्वविद्यालय संस्कृत भाषा पर केन्द्रित, अनुशासन को प्राथमिकता देने वाला, प्रतिदिन यज्ञों का आयोजन द्वारा भारतीय संस्कृति के संस्कारों एवं मूल्यों को बनाये रखने का प्रयास जैसी गतिविधियों से अन्य विश्वविद्यालय से भिन्न नजर आता है। विश्वविद्यालय की भविष्य की योजनाओं में योग साधना का विस्तार, खेल मैदान का विस्तार, रोजगार के नवीन अवसरों की तलाश एवं सर्जन प्रमुख हैं।विश्वविद्यालय की भविष्य की योजनाओं में योग साधना का विस्तार, खेल मैदान का विस्तार, रोजगार के नवीन अवसरों की तलाश एवं सर्जन प्रमुख हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Best, J.W. (1963). Research in Education. New Delhi: Prentice Hall of India.

Good, C.V.(1959). Introduction of Educational Research. Second Edition, New York : Appleton Century Crafts Ins.

Sharma, R.A.(1986).Fundamentals of Education Research. Meerut : Loyal Book Depot.

ढौंढियाल, एस.एन.; फाटक, ए.बी. (1972). शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

गुप्ता, रामचरण (2003). राजस्थान गैर सरकारी शैक्षिक संस्था. जयपुर : युनिक प्रेस।

गुप्ता, एस.पी. (2003). सांख्यिकीय विधियाँ. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।

कौल, लोकेश (1998). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली. दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस।

मुखर्जी, रविन्द्रनाथ (2001). सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी. नई दिल्ली : विवेक प्रकाशन।

ओड़, एल. के.; वर्मा, जे.पी. (1990). शैक्षिक प्रशासन. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

पाण्डेय, के.पी. (2005). शैक्षिक अनुसंधान. आगरा : विश्वविद्यालय प्रकाशन।

श्रीवास्तव, डी.एन. (2000). अनुसंधान विधियाँ. आगरा : साहित्य प्रकाशन।